आकाश से सूर्यग्रहण का नज़ारा

विजय विद्रोही

सूर्यग्रहण को ज़मीन से 41 हज़ार फुट की ऊँचाई से देखने का अपना अलग रोमांच था। एक टूअर ऑपरेटर कम्पनी ने देश के इतिहास में पहली बार आकाश से सूर्य ग्रहण दिखाने इन्तज़ाम किया था। इसे हम भारत में स्पेस टूरिज़्म की शुरुआत भी कह सकते हैं। हमें 22 जुलाई को सुबह तीन बजे एयरपोर्ट पहुँचना था। पौने पाँच बजे दिल्ली से विशेष विमान ने उड़ान भरी। विमान लखनऊ, इलाहाबाद, गया, वाराणसी होते हुए सारनाथ के ऊपर पहुँचा। वहीं से कुदरत के इस सबसे हसीन नज़ारे के दर्शन शुरू हुए।

हम 41 हज़ार फुट की ऊँचाई पर थे। बादलों से बहुत ऊपर। धीरे-धीरे सूरज ने निकलना शुरू किया। चारों तरफ लालिमा फैली थी। सूरज ने अपना प्रकाश फैलाना शुरू ही किया था कि चाँद ने मानों सूरज को धमकाना शुरू कर दिया। ऐसा लगा कि आसमान में एक बड़ा-सा सेब रखा हुआ है और कोई शैतान बच्ची उसका एक ग्रास चुपके से खा गई है। इसके साथ ही चाँद और सूरज के बीच आँख मिचौनी का खेल शुरू हो गया। चाँद ने सूरज को ढँकना शुरू कर दिया था। एक-चौथाई, फिर आधा, फिर तीन-चौथाई और धीरे-धीरे पूरे के पूरे सूरज को चाँद ने ढँक लिया। एक काली चकती और उसके चारों तरफ से बिखरी-बिखरी रोशनी नज़र आने लगी। यह था सूरज का कोरोना। फिर लगा जैसे सूरज भी कुदरत के इस खूबसूरत नज़ारे का मज़ा लेना चाह रहा है और एक कोने से टुकुर-टुकुर झाँकने लगा। और हमें दिखा आसमान में टँगा चमकीला छल्ला या हीरे की अँगूठी।

आसमान से यह नज़ारा देखना अद्‌भुत था। यहाँ सूरज की रोशनी बहुत ज़्यादा थी। हवाई जहाज़ की खिड़कियों से रोशनी छन-छन कर आ रही थी। फोटो लेने में दिक्कत आ रही थी। कभी हवाई जहाज़ इस तरफ झुकता तो कभी उस तरफ। डायमंड रिंग की रोशनी तो वास्तव में बहुत तेज़ लग रही थी। मैंने 1999 का पूर्ण सूर्यग्रहण ज़मीन से देखा था। आसमान साफ था लेकिन तब डायमंड रिंग या कोरोना में वो तेज़ी नहीं थी। वो रोशनी नहीं थी जो इस ऊँचाई से दिख रही थी। कोरोना भी बहुत साफ दिख रहा था। इतना पास कि लग रहा था जैसे हाथ बढ़ाकर उसे छुआ जा सकता हो। हाँ, एक बात बताना तो मैं भूल ही गया। जब हम कोरोना का मज़ा ले ही रहे थे कि अचानक ना जाने कहाँ से एक काले बादल का टुकड़ा आ गया। जहाज़ के पायलट ने जहाज़ को पाँच किलोमीटर के दायरे में आगे ले जाकर घुमाया और हम फिर कुदरत के नज़ारे को देख सके। इतनी ऊँचाई पर रोशनी बहुत ज़्यादा होती है। लिहाज़ा वहाँ फिल्टर वाले चश्मे लगाना बेहद ज़रूरी था। केवल पूर्ण सूर्यग्रहण के समय ही अपनी नंगी आँखों से सूरज को देखा जा सकता था। हम सबने इस हिदायत का सख्ती से पालन किया।

डायमंड रिंग के साथ सूरज ने जो झाँकना शुरू किया तो बस झाँकता ही रहा। चाँद सूरज और धरती के बीच से हट रहा था। तेज़ लाल और नारंगी-सी रोशनी पूरे आकाश में बिखरी पड़ी थी। हमारा हवाई जहाज़ लौट रहा था। यह अनोखा नज़ारा जहाज़ में सवार कोई भी आदमी फिर कभी भारत में तो कम से कम नहीं देख पाएगा क्योंकि अगला पूर्ण सूर्यग्रहण भारत में 2132 में ही दिखेगा। चकमक

विजय विद्रोही स्टार न्यूज़ के लिए सूर्यग्रहण का कवरेज कर रहे थे।